- अध्यान नं.3 -

** धूमिल के काव्य में आधुनिक बोध **

भारतीय चिंतकों ने चेतना के स्वरुप को निर्धारित करने का कार्य किया है। इस क्षेत्र में डॉ. जयनाथ नलिन, डॉ. हुकूमचंद राजपाल, डॉ. रमेश कुंतल मेघ, डॉ. नगेंद्र आदि आलोचकों ने चेतना के स्वरुप को निर्धारित ही नहीं किया अपितु अपने तराशे हुए चिंतन बोध से चेतना की व्यापकता को विवेचित किया है।

डॉ. जयनाथ नलिन का अभिमत हैं कि "बोध भाव और कर्म की समान्वित राशी ही चेतना है। चिंतन अनुभूति और कर्म की प्रक्रिया इनका प्रसार और विकास ही चेतना है। इनकी प्रतिक्रिया और परिणाम के रुप में निरंतर उगनेवाली इनकी नई-नई विविध शाखाएँ-प्रशाखाएँ सभी चेतना में समाविष्ट है।

रचनाकार वास्तविक अर्थों में बोध, भाव एवं कर्म के त्रिकोनात्मक पक्ष को एकमेव करता हुआ चेतना की व्यापकता को अग्रसारित करता हैं। सर्वप्रथम वह अपने बोध को रचनात्मकता के धरातलपर जन संवेदना सापेक्ष करता हैं। उसका यहीं सामाजिक बोध सृजन के धरातलपर उसके चिंतक को गहराता हैं। वह सामाजिक असंगतियों, विसंगतियों, विकृतियों व सामाजिक विघटन के प्रति सचेत होकर अपनी संकल्पात्मक चेतना को स्विकारात्मक अथवा नकारात्मक ढंग से प्रतिक्रियामूलक विचार अभिव्यंजित करता हैं।

कर्म की अवधारणा कार्यान्विति संम्पृक्त हैं। वह निजी जीवन में उपेक्षित रहकर जीवन पर्यंत आत्मसंघर्ष करता हुआ सामाजिक दायित्वों के प्रति संलग्न रहता हैं। वैयक्तिक स्वार्थो से तिलांजलि लेकर सर्वहारा की मानसिकता को आत्मसात करता हुआ बेकसूर लोगों के हलफनामें लेता हुआ व्यवस्था की अमानवीय नियतियोंसे जूझता हुआ अपनी सृजनधर्मिता में बोध-भाव एवं कर्म की सार्थक त्रिकोण के माध्यम से अपनी चेतना का विकास-प्रसार करता रहता हैं।

जब लेखक मूल्यहीन संस्कारों से मुक्ति पा लेता हैं तो उसकी युगीन चेतना प्रौढ-परिपक्व, समृध्द रचनाधर्म के लिए सर्वथा वर्धक होती हैं।

डॉ. मनमोहन सहगल के शब्दानुसार -

"आज आधुनिकता अपने आप में एक चेतना बन गई है। प्रायः कहा जाता था की, प्रत्येक साहित्यकार अपने युग में आधुनिक था और वह अपने से पूर्व को रुढियों को तोडकर लिख सकने के कारण विद्रोही या क्रांतिकारी था। किंतु आज हम आधुनिकता के साथ एक विशेष बोध को जोडकर बात करते है तो निश्चय ही चेतना की एक परिधि हमारे सन्मुख होती हैं। जिसके घेरे में खडे होकर हम अपने को किसी निरंतरता के संबंध में महसूस करते हैं। 35

मुक्तिबोध के शब्दानुसार -

"हमारा जीवन त्रिकोनात्मक है। उसकी एक भुजा हमारे बाह्य जगत् यानी मानव संबंधों के विशिष्ट क्षेत्र अर्थात वर्ग जगत् के विविध जीवन मूल्यों और आदर्शों के बीच से होती हुई उस छोर तक पहुंच जाती हैं। जिसे हम देश और जाति की राजनैतिक - सामाजिक स्थिति कह सकते हैं।

इस त्रिकोन की दूसरी भुजा हमारा वह अंतरंग जीवन है। जो बाह्य की क्रियाओं और रुपों को आत्मसात करता हुआ, उस बाह्य के विरुध्द या अनुकुल प्रतिक्रियाएं करता हुआ उन प्रतिक्रियाओंके विभिन्न संवेदनात्मक पुंजों के सहारे जीवन ज्ञान का विकास करता हुआ और उस जीवन ज्ञान के सहारे स्वयं को बाह्य को मिलाने और बाह्य को अपने से मिलाने का प्रयत्न करता हैं। रचनाकार अपने अनुभव पुंजों को जो उसने समाज से ग्रहण किये है ज्ञान वर्धन के माध्यम से अपनी चेतना समाज को प्रदान करता हैं।

हमारा समाज अशिक्षित हैं, रचनाकार की साहित्यिक पक्षधरता, प्रतिबध्दता अशिक्षित उपेक्षित सर्वहारा वर्ग से होती हैं। वह उन लोगों की वास्तविकताओं को काव्यात्मक संवेदनात्मक वाणी देता हैं एवं उनकी दयनीय स्थितियों तथा उत्तरदायी तत्वों को व्यंग्यात्मक लपेट में भी लेता हैं। इसलिए चेतना की व्यावहारिक कार्यान्विति हमारी पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा उसे निष्क्रिय कर देती हैं।

समाज और साहित्य में एक चेतना चक्र निरंतर चलता रहता हैं। इसलिए साहित्य-समाज दोनों ही उस चेतना तरंग द्वारा अखंड रुप में संबंध्द है। यह चेतना चक्र निरंतर घुमते हुए समाज से कुछ चेतना प्रतिक्रियाँ लेकर समाज को प्रदान करता हैं। इस प्रक्रिया से साहित्य और समाज नवीन चेतना से प्राणान्वित आलोकित उत्कर्षिक होते रहते हैं।

वैसे तो चेतना बहुआयामी ज्ञानानुशासनों से संम्पृक्त हैं परंतु हमारा लक्ष्य चेतना के ऐसे स्वरुप से है जिससे समकालीन कवि धूमिल की रचना धर्मिता की सही वस्तुनिष्ठ द्रृष्टि से पहचान हो सके।

मार्क्सवादी दर्शन चूंकी व्यक्तिवाद का घोर खंडन करता हैं। इसलिए उनका संबंध चेतना के धरातलपर सामूहिक रुप से है। इसमें संदेह नहीं कि, व्यक्ति समाज का अटूट अंग है। वह समाज से जुडा हुआ प्राणी है।

सामाजिक अस्तित्व, अंतर्विरोधी, असंगतियाँ, विसंगतियाँ, संवेदनशीलता, बुध्दिजीवी की मानसिकता को निरंतर कुरेदती हैं। वह व्यक्ति समाज के प्रति प्रतिक्रिया है। वह स्वयंमेव नहीं सामाजिक अस्तित्व से ही विकसित हुई है। वैसे तो रचनाकार की मानसिकता और समाज की अंतर्विरोधी विघटनकारी परिस्थितियों में निरंतर द्वंद्व की स्थिति रहती हैं।

चेतना वैयक्तिक अवश्य होती हैं परंतु हमें यह देखना है कि, उस वैयक्तिक चेतना का स्तर क्या है? यदि उसमें यथार्थ के तत्व हैं तो वह युग संदर्भों की परिचायक है अन्यथा वह कोई महत्व नहीं रखती।

जार्ज लारेन के कथनानुसार -

चेतना को कोई भी तत्व सामुहिक चेतना से पृथक नहीं हैं, न ही कोई विचारधारा। लारेन का कहना है, चेतना का हर तत्व समाज सापेक्ष है, बोध, भावना, विचार, विवेक समझ ज्ञानमूलक मनोवृत्ति संवदेना, अनुभूति, सह-अनुभूति, संकल्प, विकल्प आदि समग्र तत्व समाज सापेक्ष है, जिसका प्रत्येक तत्व सामाजिकता को आत्मसात किए है।

यदि हमारा समाज सामूहिक रुप से इन अंतर्विरोधों से बच सके तो धूमिल जैसे सशक्त रचनाकर्मियों की संकल्पात्मक काव्य चेतना व्यावहारिकता के धरातलपर सामाजिक बदलाव हेतु महत्वपूर्ण आयाम स्थापित कर सकती हैं। निर्विवाद रुप में स्वीकारा जा सकता हैं कि, धूमिल की काव्यचेतना बहुआयामी संदर्भो की परिचायक है जिसकी चर्चा हम विस्तार पूर्वक करेंगे।

धूमिल का रचनात्मक फलक वर्गीय चेतना से पूर्ण रुपसें प्रतिबध्द है। धूमिल एक सही वर्गीय चेतना के कवि है। धूमिल जैसे प्रतिबध्द कवि की सृजनधर्मिता समाज में परिव्याप्त वर्गों से अपनी दृष्टि ओझल करें यह सर्वथा निराधार कल्पना है।

वास्तव में कोई भी प्रतिबध्द चिंतक संवेदनशील कवि युगीन वर्गीय समस्याओं से कटकर साहित्यिक चर्चा मात्र नारेबाजी एवं परिवेश से पलायनवादी रोमंटिक अंतर्मुखी दृष्टिकोन की ही परिचायक सिध्द होगी।

धूमिल के काव्य में आधुनिक काव्य इस अध्याय में हमें यह देखना है कि धूमिल के आज के विचार क्या है याने सामाजिक, राजनीतिक, अर्थिक, धार्मिक, उच्च वर्ग, निम्नवर्ग, मध्यवर्ग आदि के बारेमें धूमिल ने अपनी राय पाठक या दर्शक के सामने रखने का प्रयत्न किया है।

धूमिल की रचना सशक्त त्रिकोन है। जो समाज में व्याप्त वर्गों की मनःस्थितियों एवं मनोवृत्तियों का एक्स-रे प्रस्तुत करती हैं।

वास्तवमें मानव जाति के समग्र इतिहास को दृष्टिपात करने से स्पष्ट परिलक्षित होता हैं कि, हमारा समाज वर्गीय मनोवृत्तियों पर आधारित हैं ऐसा धूमिल का कहना है। एक तरफ समाज का यह हाल है तो दूसरी तरफ साहित्यकार है जो जीवन मूल्यों की स्थापना करता हैं और समाज में व्याप्त वर्गों एवं मूल्यहिनताओं को समाप्त करने का प्रयत्न अपनी लेखनीद्वारा करता हैं उसमें एक धूमिल भी है।

धूमिल की वर्गीय द्रुष्टि बिल्कुल स्पष्ट घर्मी वर्गीय मनोवृत्तियों पर आधारित हैं। "मोचीराम" इनका साक्षात प्रमाण है। धूमिल अपनी कविताओं में वर्ग संगठन और सामुहिकता हेतु निरंतर प्रयास करता रहा। वर्ग संगठन से तात्पर्य है कि, सार्थक कार्यान्विति जिसके बीना रचनाकार की वर्गीय चेतना का कोई महत्व नहीं रहता।

"जब कि मैं जानता हूँ कि, इनकार से भरी हुई एक चीख
और एक समझदार चुप
भविष्य गढने में, "चुप" और "चीख"
अपनी-अपनी जगह एक ही किस्म से
अपना-अपना फर्ज अदा करते हैं।" (1)

धूमिल ने एक ओर सर्वहारा वर्ग की मानसिकता को प्रतिबध्द किया है तो दूसरी ओर बुध्दिजीवियों की परायीकृत मनोवृत्तियों पर व्यंग्य भी किया है। उनका कहना है - "यदि बुध्दिजीवी वर्ग भी अपने दायित्व से विमुख हो जाय तो इस तिरस्कृत निरक्षर वर्ग का पक्षधर्मी कौन ?

"जबकि असलियत यह है कि आग
सबको जलाती हैं सच्चाई
सबसे होकर गुजरती हैं
कुछ है जिन्हें शब्द मिल चुके है
कुछ है जो अक्षरों के आगे अंधे है।" (2)

वास्तव में धूमिल का समस्त काव्य प्रयास निम्नवर्ग की संवेदना उनकी अब, आकार, पराजय, बोध एवं क्रांतिबोध गलत-सही समस्त मान्यताओं को प्रतिबध्दता के धरातलपर आत्मसात किए है। धूमिल का समस्त काव्य प्रयास यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति हैं। जिसमें जीवन की अनुभूतियाँ भोगा हुआ कटु सत्य एवं सामाजिक असंगतियों, विसंगतियों की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। इस निम्न वर्ग को कभी "मामूली आदमी" कभी "आम आदमी" से संबोधित किया गया है। कवि की समस्त संवेदना सर्वहारा वर्ग की मानसिकता से प्रतिबध्द है।

**** धूमिल के आधुनिक सामाजिक विचार -**

सर्वहारा निम्न वर्ग -

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत सत्ता की बागडोर, संचालन शक्ति प्रजातंत्र के हाथों में आयी। हमारी व्यवस्था पूँजीपतियों, भूस्वामियों से कंधा मिलाकर चलने लगी। उच्च वर्ग ने सामंतवादी व्यवस्था से अपना गठबंधन किया। परिणामतः हमारी व्यवस्था पूँजीपतियों, भूस्वामियों से संम्पृक्त हो गई।

शोषक वर्ग के इस त्रिकुट ने देश में अर्थिक संकट और वर्ग वैषम्य के अंतराल को प्रसारित किया। परिणामतः राष्ट्र में वर्गीय संबंध भयावह होते गए।

पूँजीपतियों, भूस्वामियों को यह चिंता रही कि कहीं निम्न वर्ग संगठित होकर क्रांति न कर दे। इस त्रिकुट ने मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी को चंद सुविधाएँ देकर उसे अपना पालतू बना लिया। मध्यवर्ग के मुँह में लालच की हड्डी और गले में पालतू पट्टा डाल दिया। मध्यवर्ग एवं उच्च वर्ग की पारस्पारिक सांठ-गांठ निम्नवर्ग के लिए घातक सिध्द हुई।

समाजवादी विचारधारा के अनुसार भी क्रांति सदैव निम्न सर्वहारा वर्ग ही करता हैं। जिसका सीधा संबंध उत्पादन से है। वह अनाज उत्पादन का आधार होकर भी स्वयं रोटी खाने से वंचित हैं। निम्नवर्ग को क्रांति के लिए मध्यवर्ग का सहयोग चाहिए, ताकि वह शोषण से मुक्ति प्राप्त कर ले किंतु मध्यवर्ग स्वहित के लिए निम्न वर्ग को सहयोग नहीं देता। परिणामतः शोषक शोषित संबंध और अधिक प्रसारित होते रहें। शोषित जनता स्वयं भूखी रहकर पूँजीपतियों की तिजोरियाँ भरती रही।

"यह जनता एक भेड है
जो अपनी पीठ पर
दूसरों के लिए
ऊन की फसल ढो रहीं है।" (3)

निम्न वर्ग समाज में उत्पादन एवं समस्त कार्यव्यापार का संचालक है, परंतु विडंबना का विषय है कि, वह जीवन में स्वयं रोटी खाने से वंचित हैं। कृषक वर्ग वर्षभर खेतों में खेती करते हैं, परंतु अनाज भूस्वामी ले जाते हैं। इस शोषित जनता की दयनीय स्थिति ऐसी निरीह मूक भेड की स्थिति हो चुकी है जिसे पूँजीपति गडरिए चरा रहा है।

निम्नवर्ग का जन्म एवं मरण भी पूँजीपतियों के निष्ठुर पंजों से होता हैं। इसीलिए निम्न सर्वहारा वर्ग भेड की भांति मूक बनकर पूँजीपतियों के बाडों में अपना शोषण दे रहा है। यह वर्ग भूस्वामियों की हरियाली का साधन है परंतु इसके निजी जीवन में कभी भी बसंत नहीं आया। इसकी प्राप्ति में सिर्फ वर्षभर शोषक को आधा पेट भोजन ही मिलता हैं।

"कुल रोटी तीन
खाने से पहले मुँह दुब्बर
पेट भर पानी पीता हैं
और लजाता हैं
कुल रोटी तीन

पहले उसे थाली खाती हैं
फिर वह रोटी खाता हैं।" (4)

धूमिल कहते हैं, निम्नवर्ग इसीलिए भाग्यवादी बन चुका है किं, हर आदमी चुपचाप नींद और कीर्तन के बीच जागरण तय करता हैं। उसकी यह धारणा बन चुकी है कि वह कुछ नहीं कर सकता। जो कुछ करता है वह समय ही करता हैं। वैसे तो निम्न वर्ग के लोग इस नारकीय स्थितियों से मुक्ति प्राप्त करना चाहता हैं, परंतु एकत्रित समाज के पूर्ण सहयोग के बीना वह लाचार है।

"उसमें
सारी चीजों को नए सिरे से बदलने की
बेचैनी थी रोष था
लेकिन उसका गुस्सा
एक तथ्यहीन मिश्रण था
आग आंसू और "हाय का"।" (5)

उपर्युक्त उध्दरण से यह समझ में आता हैं कि, निम्न वर्ग में क्रांति की भावना (मानव मुक्ति का प्रयास) तो हैं परंतु "आंसू और हाय" को भी आत्मसात किए है। तभी तो धूमिल कहते हैं- "यह सही है कि, मुझमें भी आग है परंतु वह भभककर बाहर नहीं आती। क्योंकि उसके चारों ओर चक्कर काटता हुआ पूंजीवादी दिमाग है।

निम्नवर्ग विवश होने के कारण पूंजीवादी दिमाग के समक्ष नतमस्तक हो जाता हैं। व्यवस्था भी पूंजीपतियों की दासी है तथा मध्यवर्ग की सुविधा जीवी होकर पूंजीपतियों का पक्षधर्मी बन चुका है।

राजनीतिक तंत्र और सामाजिक षड्यंत्र दोनों के मध्य यह वर्ग असुरक्षित शोषित जीवन व्यतीत कर रहा है। इस वर्ग का अव्यस्थित और असभ्य ढंग से रक्तपात किया जाता हैं। निम्न वर्ग की क्रांति को शमित करने के लिए व्यवस्था इन्हें निरंतर झूठे आश्वासन देती हैं।

लोहे (निर्ममता, क्रुरता, शोषण) का स्वाद (अनुभव) तो वहीं शोषित व्यक्ति बन सकता हैं। जिसके मुंह में शोषण की क्रूर लगाम है। धूमिल प्रजातंत्रिक देश में वर्ग के वैषम्य की दरारों को देखकर लिखते हैं। -

"ऐसा जनतंत्र है
जिसमें जिंदा रहने के लिए
घोडे और घास को
एक जैसी छूट है।" (6)

धूमिल कहते हैं यह कितनी विडम्बनामयी स्थिति हैं कि, प्रजातांत्रिक देश में घोडे और घास (शोषक-शोषित) के संबंध विद्यमान है।

मध्यवर्गीय समाज कभी भी पूँजीवादी व्यवस्था का विरोध नहीं कर सकता। वह तो सिर्फ व्यवस्था की कटुनीतियों का ही पक्षधर्मी है - फिर भी निम्न वर्ग से उसकी पक्षधरता कैसी? वह मुर्गे की बांग याने (क्रांति विद्रोह) को सुनकर भी अपनी सुप्तावस्था याने (निद्रा) को नहीं तोडता अपितु वह परायीकृत हो चुका है।

"मुर्गे की बांग पर
सूरज को टांग कर
सो जाओ।" (7)

निम्न वर्ग मुर्गे के भांति व्यवस्था की अंतर्विरोधी अमानवीय अंधी नीतियों के विरुध्द क्रांति की बांग देता हैं। यह क्रांति विद्रोह की बांग शोषण एवं अमानवीय नीतियों से मुक्ति की आवाज है।

इसीलिए सर्वहारा वर्ग की विद्रोहात्मक चेतना को पूँजीपति एवं व्यवस्था पंथी लोग पांवों तले दबा कर कत्ल कर देते हैं। वह चिल्लाता हैं, छटपटाता हैं परंतु हमारा स्वार्थी समाज उनकी रक्षा हेतु अंतर्विरोधी दायित्व निभाता हैं। इसीलिए सर्वहारा वर्ग की क्रांति अंधे समाजद्वारा कुचल दी जाती हैं। धूमिल ने इसका चित्र हमारे सामने रखा है।

"रक्तपात कहीं नहीं होगा
सिर्फ एक पत्ती टूटेगी
एक कंधा झुक जाएगा
फडकती भूजाओं और सिसकती
आँखो को देखकर
एक साथ बांधकर रख देंगे
काले दराजों के निश्चल एकांत में।" (8)

उपर्युक्त पंक्तियाँ पढकर हमारे समझ में यह आता हैं कि, निम्न वर्ग मानव मुक्ति शोषण के विरुध्द लडता हैं। वह अमानवीय नीतियों के विरुध्द अपनी बांग देता हैं परंतु उसकी क्रांति सामुहिक धरातलपर नहीं हो पाती, इसीलिए वह कुचल दी जाती हैं।

वास्तविकता यहीं है कि, मध्यवर्ग भीड से भागता हैं और उससे घृणा करता हैं क्योंकि, वह वास्तविक धरातलपर व्यवस्थाधर्मी है। धूमिल ऐसे षड्यंत्रकारी लोगों के चेहरे नग्न करते हुए लिखते हैं।

"लो, यह रहा तुम्हारा चेहरा
यह जुलूस के पीछे पडा था।" (9)

धूमिल का कहना है, वास्तव में यहीं षड्यंत्रकारी नीतियाँ सर्वहारा वर्ग की क्रांति हेतु बाधक है। निम्न वर्ग की अस्वस्थ (शोषण) स्थिति में कोई व्यक्ति सुधार लाने का पक्षपाती नहीं है।

"हम दरवाजा न खोलें
लेकिन शहर में
किसी भी सडक पर
घूमनेवाली बीमार रफ्तार
इस अस्पताल के सदर गेट पर
(10) दस्तक देती हैं।" (10)

धूमिल की वर्गीय पक्षधरता इसी अस्वस्थ रफ्तार को चेतनाशील करके नक्सलवाडी चेतना के माध्यम से प्रौढ शिक्षा देकर जागृत करना चाहती हैं, जिससे वह शोषण से मुक्ति पा सके।

"अपनी आदतों में फूलों की जगह पत्थर भरो
मासूमियत के हर तकाजे को
ठोकर मार दो।" (11)

निश्चित रुप से धूमिल की सामाजिक प्रतिबध्दता तिरस्कृत व्यक्ति की पक्षधर्मी वकालत हैं। वह इस बेकसूर आदमी पर आरोपित अत्याचारों के विरुध्द लडता हैं।

"मोचीराम" धूमिल की वर्गीय चेतना की सशक्त कलात्मक, प्रयोगधर्मी, युगांतकारी कविता हैं। "मोचीराम" के व्यावसायिक कार्य से पृथक होकर धूमिल की रचना प्रक्रिया सृजनात्मक चेतना और उसके रचनात्मक दायित्व की सांकेतिक अभिव्यक्ति भी देती चलती हैं।

"मोचीराम" के माध्यम से धूमिल ने प्रत्येक व्यक्ति एवं वर्ग की पहचान उसके बाहरी रुप से न करके व्यक्ति के अंतर्मन के अंतस्तलों में उतर कर उनके चरित्र की पहचान जूते के माध्यम से करवाता हैं। धूमिल का चिंतक समाज के विभिन्न व्यवसाय के लोगों के भीतरी एवं बाहरी (दोहरे व्यक्तित्व) दोनों रुपों मनःस्थितियों को भली-भांति पहचानता हैं। "मोचीराम" के पास निम्न वर्ग के लोग भी आते हैं - कवि इस वर्ग की दूषित मनोवृत्तियों को देखकर इन्हें "चेचक भरे चेहरे" वाले लोग तक कह जाता हैं।

"यहाँ हर तरह के जूते आते हैं
और आदमी की अलग-अलग 'नवैयत'

बतलाते हैं

सबकी अपनी-अपनी शक्ल है

अपनी-अपनी शैली है

मसलन एक जूता हैं

जूता क्या है चकतियों की एक थैली है

जिसे चेचक ने चुग लिया है।" (12)

धूमिल की यह वर्गीय प्रतिबध्दता हैं कि वह अपनी जाति की विवेकहीनता की दूषित मनोवृत्तियों को देखकर खीझ उठता हैं क्योंकि आज आवश्यकता क्रांति की भावना से ही विकार युक्त भरी बीमारी से मुक्ति पायी जा सकती हैं। यह वर्ग समाज में अंतर्विरोधी नीतियों को देखकर भी "चुप और चीख" की भावना को आत्मसात किए है।

"मै जानता हूँ कि, इनकार से भरी हुई एक चीख

और एक समझदार चुप

दोनों का मतलब एक है

भविष्य गढने में 'चुप' और 'चीख'

अपनी-अपनी जगह एक ही किस्म से

अपना-अपना फर्ज अदा करते हैं।" (13)

उपर्युक्त पंक्तियों से यही ध्वनि निकलती हैं कि, इनकार से भरी चीख हमारे समाज के सचेत लोगों की विद्रोहात्मक, नकारात्मक दृष्टि है जो सामाजिक, राजनीतिक अंतिर्विरोधों को देखकर चीख की ध्वनि देती हैं, परंतु चुप शब्द में उसकी विवशता बोध की स्थिति को देखा जा सकता हैं। अत्याचारी व्यवस्था की घिनौनी नीतियाँ है, जो उसकी "चीख" क्रांति की भावना को शमित करती हैं।

"यद्यपि यह सही है कि मैं

कोई ठंडा आदमी नहीं हूँ

मुझमें भी आग है

मगर वह

भभक कर बाहर नहीं आती

क्योंकि उसकी चारों ओर चक्कर काटता हुआ

एक पूँजीवादी दिमाग है।" (14)

मध्य वर्ग :-

मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी समाज भौतिक युग की मरीचिका में मृग समान भटकता हुआ वैयक्तिक सुख-

सुविधाओं हेतु निरंतर दौड लगा रहा है। उसकी मृग भरी चिका वैयक्तिक स्वार्थ लिप्सा की भावना कदापि समाप्त नहीं होती।

यह वर्ग भौतिक युग में "स्वहित पूर्ति" हेतु अपना ही व्यक्तित्व चमकाने में संलग्न है। यही बुध्दिजीवी समाज के मुख्य अंतर्विरोधी बिंदु है, जिसके कारण यह वर्ग सर्वहारा वर्ग की मानसिकता से सर्वथा परायीकृत हो चुका है।

यह बुध्दिजीवी समाज सार्थक दायित्व से अपनी कार्यान्विति की भूमिका निभाए तभी सर्वहारा वर्ग शोषण से मुक्ति प्राप्त कर सार्थक निर्माण की ओर दिशोन्मुख होगा। धूमिल ने ऐसे लोगों को कुत्ते संज्ञा देकर अलंकृत किया है।

"उस लपलपाती हुई जीभ और हिलती दुम के बीच
भूख का पालतू पन
हरकत कर रहा है
उसके दाँतों और जीभ के बीच
लालच की तमीज है जो तुम्हें
जायकेदार हड्डी और टुकडे की तरह
प्यार करती हैं।" (15)

बुध्दिजीवियों में व्याप्त अंतर्विरोध, विवेक हीनता, दायित्व हीनता की स्वार्थी मृग-मरीचिका संपन्न दृष्टि को रेखांकित करती हैं। उन्हें कहीं क्रांति हेतु उकसाता है परंतु आंतरिक धरातलपर व्यवस्था से अपना संबंध स्थापित कर उनकी क्रांति को असफल करवा देता हैं।

धूमिल का कहना है कि, मध्य वर्ग चेतनशील, विवेकशील होकर भी निम्न वर्ग की विद्रोहात्मक क्रांतिधर्मी बांग सुनकर भी सुप्त रहने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझता हैं, क्योंकिं व्यवस्था पूँजीवादी है एवं मध्य वर्गीय समाज व्यवस्था अंतर्विरोधी नीतियों का पक्षधर्मी है।

"मुर्गे की बांग पर
सूरज को टांगकर
सो जाओ
हत्याओं के खिलाफ
क्योंकि यही वक्त हैं जब कि सिरहाने पर
घडी के अलार्म का टूटा होना भी
एक अदद सुविधा है।" (16)

धूमिल कहते हैं यह स्वाभाविक है कि आज के भौतिकवादी युग में व्यक्ति, व्यक्ति से पराया हो चुका है। सर्वत्र सामाजिक दूरी की भावना दिखाई देती हैं। निम्न वर्ग का तो क्या कहना वह वर्ग तो समाज में कब का पराया हो चुका है। उनके लिए कोई कुछ नहीं कर सकता यह तो बडी दुख की बात हैं, इसीलिए धूमिल निम्न के लिए अपना मत व्यक्त करते हैं। और समाज को एक नयी दिशा की ओर ले जाने का प्रयत्न करते हैं।

धूमिल ऐसे वर्ग लोगों के लिए अंतर्विरोधी को यथार्थ की धरातलपर प्रस्तुत करते हैं। वो कहते हैं हत्यारा समन्वयवादी है, हिजडे लिंग बोध पर भाषण दे रहें है, वेश्याएं आत्मशोध पर कविता पढ रहीं है, बनिए तथा असफल छात्राएं अधापिकाएं बनी बैठी हैं, इन सब विसंगतियों को धूमिल अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं और आगे लिखते हैं। –

"सबसे अधिक हत्याएं
समन्वयवादियों ने की
सबसे अधिक जेवर
दार्शनिकों ने खरीदा।" (17)

मानव में जो विवेक होता हैं वह विवेक इन लागों के लिए एक खिलवाड की वस्तु बन गई है। वह जैसा चाह इस वस्तु के साथ खेलते हैं। यह वस्तु मानवीयता हैं और सही मानवीयता का अभाव सर्वत्र देखने को मिलता हैं। धूमिल के ही शब्दों में देखिए –

"ओफ् बडी गर्मी हैं रुमाल से हवा करता हैं
मौसम के नाम पर बिसूरता हैं
सडक पर आतियों–जातियों / को वानर की तरह
घूरता हैं/.... घंटे भर खटवाता हैं
मगर नामा देते वक्त
साफ "नट" जाता हैं
शरीफों को लूटते हो वह गुर्राता हैं। (18)

उपर्युक्त पंक्तियाँ पढकर यह समझ में आता हैं कि, मध्य वर्गीय लोग कैसे अपने से छोटे लोगों के प्रति सहानुभूति न रखकर उनका जैसा चाहे शोषण करते हैं। ऐसे लोग पैसा देते समय स्वयं को

"शरीफ" और "मेहनती" वर्ग को "लुटेरा" जैसे समझते हैं। लेकिन वास्तव में देखा जाय तो यह "शरीफ" लोग ही "लूटेरे" होते हैं और "मेहनती" वर्ग "शरीफ" होते हैं।

धूमिल जैसे कवियों को अपनी कविता में बांधने, कॉट-छॉट करने, ठोकने, पीटने, और निरंतर आरोपित कर पूर्वाग्रही आदेश देते हैं।-

"चोट जब पेशे पर पडती हैं
तो कहीं न कहीं एक चोर कील
दबी रह जाती हैं
जो मौका पाकर उभरती हैं
और अंगुली में गडती हैं।" (19)

धूमिल जैसे कवि ऐसें प्रसंगों को नया आयाम देकर विविध संदर्भों की ओर दिशोन्मुख करते हैं। जहॉं मोची का संदर्भ अनायास परिवर्तित होता हैं।

"जो यह सोचता हैं कि, पेशा एक जाति हैं
और भाषापर
आदमी का नहीं, किसी जाति का अधिकार हैं
जब कि असलियत यह हैं कि, आग
सबको जलाती हैं सच्चाई
सबसे होकर गुजरती हैं
कुछ है जिन्हें शब्द मिल चुके हैं
कुछ हैं जो अक्षरों के आगे अंधे हैं। (20)

उससे यह स्पष्ट होता हैं कि, साहित्य कर्म पर किसी पेशे-जाति, का जन्मसिध्द अधिकार नहीं होता इसीलिए कवि की रचनाधर्मिता निम्न वर्ग, मध्य वर्ग की मानसिकता को संश्लिष्ट धरातलपर अभिव्यंजित करती हैं।

उच्च वर्ग -

वैसे तो धूमिल का रचना साहित्य सर्वहारा वर्ग के प्रति प्रतिबध्द है, एवं मध्य वर्गीय अंतर्विरोधी समाज पर व्यंग्य करती हैं, वहीं शोषक वर्ग पूँजीपतियों-भूस्वामियों के प्रति घृणा, खीझ की भावना को आत्मसात करती हैं।

पूँजीपति, भूस्वामी वर्ग शोषित जनता, कृषकों की बैसाखियों का सहारा लेकर ऐश्वर्यमयी जीवन व्यतीत करने में संलग्न है - कारण हमारी व्यवस्था पूँजीवादी है। हमारे समाज में समस्त कार्यव्यापार

एवं उत्पादन का संचालन आधार निम्न सर्वहारा वर्ग हैं, परंतु वह स्वयं जीवन में रोटी खाने, परिवार पालने से भी वंचित। धूमिल इसलिए पूँजीपतियों के प्रति व्यंग्य करते हुए लिखते हैं।

धूमिल कहते हैं कि, अनाज कोई पैदा करता हैं, खाता कोई और है। इन दोनों को छोडकर एक तीसरा जमाखोर वर्ग भी है, जो न रोटी खाता हैं न पैदा करता हैं, अपितु वह सिर्फ रोटी से खेलता हैं। यह जमाखोर वर्ग ही समाज का सबसे बडा शत्रु है। जिसने व्यवस्था से अपना गठबंधन कर रखा है। जनता भूखी मरती रहें, जमाखोर वर्ग कभी भी गोदामों का ताला नहीं खोलते। ये लोग निम्न वर्ग के पेट से खेलते हैं।

धूमिल इन जमाखोरों, पूँजीपतियों इस घृणित, कुत्सित व्यवहार को नग्न करते वास्तविक स्थिति का बोध करते बिना नहीं रहते।

"वहाँ बंजर मैदान
कंकालों की नुमाईश कर रहें थे
गोदाम अनाज से भरे पडे थे
और लोग भूखे मर रहे थे।" (21)

जमाखोरों की इस अमानवीय नियति समाज में निम्न वर्ग को रोटी खाने से भी वंचित कर दिया है, जब अनाज माल गोदामों में कैद हो तो जनता की स्थिति कंकाल जैसी होनी सहज स्वाभाविक है। जमाखोर माल को गोदामों में बंद कर देते हैं तथा अकाल पडने पर अधिक दामोंपर बेच कर निम्न वर्ग की भावना और पेट से खेलते हैं। इस खेल में उन लोगों को बडा मजा आता होगा। वैसे तो निम्न कृषक वर्ग ही उत्पादन की मूल शक्ति हैं और यह शक्ति भूखी है रोटी खाने से वंचित हैं।

"जो अपने चेहरे की राख
दूसरे के रुमाल से झाडता हैं
जो अपना हाथ मैला होने से डरता हैं
वह एक नहीं ग्यारह कायरों की
मौत मरता हैं।" (22)

ऐसा लगता हैं इस वर्ग के लिए प्रेम, सहानुभूति, मानवीयता जैसे शब्द समाप्त हो चुके है। धूमिल इस उच्च वर्ग को धृष्ट मोची की संज्ञा देते हैं। यह लोग भोली निरक्षर जनता को सहानुभूति के नाम से ठगते हैं। इस वर्ग के लोग असली अपराधी का नाम लेता हैं इसे ये "भेडिए" लोग खा जाते हैं।

"क्योंकि असली अपराधी का
नाम लेने के लिए

कविता सिर्फ उतनी देर तक सुरक्षित हैं
जितनी देर, कीमा होने से पहले
कसाई के ठीहे और तनी हुई गँडास के बीच
बोटी सुरक्षित हैं।" (23)

धूमिल इन आदमखोरों, पूँजीपतियों के घृणित अमानवीय व्यापारों से पूरी तरह परिचित थे। कैसे ये लोग व्यवस्था से टक्कर लेनेवाले व्यक्ति को समाप्त करते हैं। निम्न वर्ग एवं बुध्दिजीवी भी इनके निष्ठुर पंजे का शिकार हो जाते हैं।

"एक अजीब सी प्यार भरी गुर्राहट
जैसा कोई मादा भेडिया
अपने छौने को दूध पिला रही है और
साथ ही किसी मेमने का सिर चबा रही हैं।" (24)

मार्क्सवाद की तरह धूमिल नास्तिक नहीं थे अपितु वह अपनी कविताओं की तरह ईश्वर के प्रति अस्तिक भी थे। इसलिए अंतमें धूमिल कहते हैं।-

"हे ईश्वर हमारे
रिश्तों में बल दे
हमारी रीढ की हड्डी में बल दें।" (25)

धूमिल के आधुनिक राजनीतिक विचार :-

राजनीतिक षड्यंत्रों का समाज की प्रत्येक गतिविधि पर प्रभाव पडना सहज स्वाभाविक है। समाज के लोग ही संसद मंडल के सदस्यों को स्वयं चुनते हैं ताकि राजनीति समाज की समस्त गतिविधियों कार्य प्रणालियों एवं सामाजिक मूल्यों की स्थापना कर उसे सार्थक ढंग से संचालित करे।

वास्तविक अर्थों में व्यवस्था भी एक समाज द्वारा निर्वाचित होकर ही तो संसद के सदस्य नियुक्त होते हैं। राजनीति एवं संसद का मूल लक्ष्य सामाजिक मूल्यों की स्थापना एवं समस्त सामाजिक गतिविधियों को व्यवस्थित ढंग से संचालित करना है।

धूमिल जैसे प्रतिबध्द कवियों की सृजनात्मक लेखनी राजीतिज्ञों के अंतर्विरोधों को यथार्थ परक धरातलपर अभिव्यंजित करती हैं। धूमिल "संसद से सडक और सडक से संसद तक" का विलक्षण कवि है। वह सडक और संसद के पारस्पारिक भीतरी संबंधों की संम्पृक्ति को वास्तविक धरातल पर पहचान चुका है।

सडक (जनता) ही संसद का निर्माण करती हैं। परंतु विडंबना का विषय यह है कि, व्यवस्था पंथी स्वार्थ प्रेरित राजनीतिज्ञ संसद में घुसते ही शपथ ग्रहण कर सडक (जनता) से अपना सेतु तोड लेते हैं। व्यवस्था की अंधी नीतियों का विरोध तो राजनीतिज्ञों को करना चाहिए ऐसा धूमिल का कहना है।

वास्तव में आज समाज के हर क्षेत्र में व्यवस्था के स्वार्थ जीवी लोग सर्वत्र विद्यमान है, ये लोग सदैव ही "स्वहित पूर्ति हेतू" कुर्सी पाने के लिए एक दूसरे पर कीचड उछालते हैं। जब कि धूमिल की रचनाधर्मिता व्यवस्था विरोध मानव कल्याण, सामाजिक मूल्यों एवं सार्थक कुर्सी के अधिकारी व्यक्ति के लिए प्रयासरत हैं।

धूमिल ने अपने साहित्य द्वारा अमनावीय नीतियों का विरोध किया है। वह इस व्यवस्था की अमानवीय नीतियों के माध्यम से जनता को मानवता का सही मार्ग प्रशस्त करना चाहता हैं। उनका यह समस्त विरोध अंतर्विरोधी नीतियों को समाप्त करना है।

धूमिल स्वतंत्रता, प्रजातंत्र, चुनाव प्रणाली, राजनीतिज्ञों, चरित्रों और उनकी आदर्श मूलक परिकल्पनाओं की वास्तविकता से पूर्ण परिचित थे। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जिन आदर्शों, स्नेहिल संबंधों, मानव मूल्यों एवं सुधारों की आशाएँ थी वह सब की सब वैसी की वैसी ही रह गयी।

हमारी पूँजीवादी व्यवस्था वर्ग वैषम्य की दरारों को देखकर भी मौन रही। वर्ग वैषम्य का अंतराल शोषण का भयंकर दमन चक्र एवं यथास्थितियां पूर्ववत विद्यमान रही।

धूमिल कहते हैं भारत लोकतांत्रिक राष्ट्र तो अवश्य बना परंतु यह लोकतंत्र राजनीतिज्ञों, पूँजीपतियों द्वारा वायुमंडल में फेंका गया गोला था जो एकाएक हमारी आँखों के सामने से ओझल हो गया। परिणाम यह हुआ कि लोकतंत्र की शैशवावस्था में ही हत्या कर दी गयी।

हमारा समाज आज भी जानवर की तरह विवशता से जीवनयापन करता हैं। वह चुपचाप विवश होकर जानवर की भांति मूक बनकर इन अमानवीय कृत्यों को देखता भी है, भोगता भी और सहता भी है। जनता की स्थिति जानवर जैसी होनी सहज स्वाभाविक है। और इसका जिम्मेदार हमारा समाज ही है, इसीकारण व्यवस्था में सुधार होना भी संभव नहीं है।

परंतु धूमिल का उपर्युक्त अभिमत इस तिरस्कृत समाज की वास्तविकता का पर्दाफाश करते बीना नहीं रहता। क्योंकि हमारी व्यवस्था सुधार में सुविधाजीवी मध्य वर्ग के षड्यंत्र ही उत्तरदायी है। व्यवस्था में सुधार तभी संभव है, जब निम्न और मध्य वर्ग का एकत्रीकरण हो। मानव-मानव के मन में एक दूसरे के प्रति प्यार निर्माण हो। एक दूसरे के प्रति जो द्वेष भावना है, वह हमेशा के लिए नष्ट होगी, तभी कहीं व्यवस्था में सुधार होना संभव हैं।

आज हमारे देश में भुखमरी, बेरोजगारी, अकाल आदि समस्याएँ हमेशा विद्यमान रहती हैं। आजादी और गांधी की राम राज्य कल्पना भी आश्वासन मात्र रह गई ऐसे आश्वासनों को देखकर ही कवि मन बोल उठता हैं।

"अपने दिमाग के आत्मघाती एकांत में
खुद को निहत्या साबित करने के लिए
मैंने गांधी के तीनों बंदरों की हत्या की है।" (26)

धूमिल का गांधी के तीन बंदरों (अहिंसावाद) से मोह भंग हुआ। क्योंकि आज वह बुरा देख रहा है, बुरा सुन रहा है, और बुरा कह रहा है। यहीं कारण है कि, हमारे राष्ट्र को चीन, पाकिस्तान के आक्रमण सहने पडे। क्योंकि हमें गांधी के तीन बंदरों के आदर्श की उपेक्षा नहीं करनी थी। नेहरु जिसे धूमिल मोती की भव्य, दिव्य आभा संपन्न व्यक्तित्व मानता था। कवि के मोहभंग का शिकार होते बिना नहीं रहा।

"मैं अपनी सम्मोहित बुध्दि के नीचे
उसी लोकनायक को
बार-बार चुनता रहा
जिसके पास हर सवाल का
एक ही जबाब था
यानी की कोट के बटन होल में
महकता हुआ फूल गुलाब का।" (27)

जब समाज में भूखें रोते बच्चे हों उनके लिए दूध ना हो तो नेहरु के "गुलाब के फूल" का कोई समाधान नहीं है। ऐसे "गुलाब के फूल" का क्या महत्व जब भावी भविष्य के निर्माताओं के चेहरे ही उदासिन हो।

राजनीतिज्ञ तो जनता के सामने वोट लेने आते हैं। वे जनता को नए जनकल्याण के आश्वासन देते हैं। परंतु उनकी कथनी और करनी में बहुत अंतर होता हैं। सत्ता प्राप्ति के उपरांत यह लोग सडक से अपना नाता ही तोड लेते हैं, यानी की समाज की कोई पर्वा ही नहीं करता।

"मुझे झेलनी पडी थी - सबसे बडी ट्रैजडी
अपने इतिहास की
जब दुनिया के स्याह और सफेद चेहरों ने
विस्मय से देखा की ताश्कंद में

समझौते की सफेद चादर के नीचे
एक शांति यात्री की लाश थी।"   (28)

विडंबना यहीं हैं कि, जनहित की भावना को आत्मसात करनेवाली व्यक्तित्व शीघ्र ही महाप्रस्थान करते हैं। कवि की दृष्टि में तदुपरांत राजनीतिज्ञों ने समाज के हित की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। पर दुःख की भावना "स्वहित" में परिवर्तित होती दिखाई दी। किस्सा कुर्सी का संघर्ष चला। मानव कल्याण के लिए कोई प्रयास नहीं हुआ।

"मैं हर रोज देखता हूँ कि व्यवस्था की मशीन का
एक पुर्जा गरम होकर
अलग छिटक गया हैं
और ठंडा होते ही
फिर कुर्सी से चिपक गया है
उसमें न हया है
न दया है।   (29)

इन राजनीतिज्ञों लोगों में कोई भी लज्जा का भाव नहीं होता। क्योंकि समाजद्वारा निर्वाचित होकर समाज से इनका कोई सरोकार नहीं होता। यह लोग किस्सा कुर्सी का और भाई-भतीजावाद की परंपरा को जीवित रखना चाहते हैं।

"हाँ, यह सही है कि, कुर्सियाँ वही है
सिर्फ टोपियां बदली है।   (30)

हमारी व्यवस्था निम्न वर्ग को पैसे देकर खरीद लेती हैं। यह वर्ग निरक्षर, विवश एवं भूखा होने के कारण इनके हाथो बिक जाता हैं।

"सेर भर कवाब हो
एक अध्दा शराब हो
नूरजहाँ का राज हो
खूब हो
भले ही खराब हो।"   (31)

जहाँ व्यवस्था पैसे से निर्वाचित होती हो, वहाँ षड्यंत्रकारी विफल सत्ता का निर्माण ही संभव हैं। जिसने समाज के तीनों वर्गो को पंगु बना दिया है। यह लोग समाज में अलग-अलग मुखौटे पहनकर रहते हैं। ऐसे व्यक्ति जो जनता को पैसे देकर खरीदता हैं। वह भोली-भाली गरीब जनता

पैसे के लालच में आकर फँस जाती हैं। और जैसी व्यवस्था चाहती हैं वैसे करने को तैयार हो जाती हैं। वह यहां तक की, वह अपना ईमान, जमीर, बेचने को तैयार होते हैं, क्योंकि ऐसे लोग पेट की आग से मजबूर होते हैं। और बुरा काम करते वक्त भी वह अपनी जान की परवाह नहीं करता। और ऐसे काम करते-करते दो चार आदमी मर भी गये तो राजनेताओं को कोई ठेंस नहीं पहुंच जाती। उनके परिवार वालों को पैसे देकर उनका मुँह चुप कर दिया जाता हैं। यह सब आदमी पैसे की लालच के कारण ही करता हैं और उनकी गरीबी उन्हें ऐसा करने को मजबूर करती हैं और ऐसी मजबूरी का फायदा ही हमारी शासन व्यवस्था उठाती हैं।

इसीलिए धूमिल ऐसे लोगों को प्रौढ शिक्षा देना चाहता हैं, ताकि सही व्यक्तित्व ही संसद सदस्य बने। संसद के पास समाज की समस्याओं का एक ही इलाज है और वह हैं आश्वासन।

"अपने यहां संसद
तेल की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है
आधा पानी है।" (32)

वैसे तो संसद समाज के लिए समस्याओं का समाधान ढूँढती हैं। परंतु अंतिम स्थिति में उन समाधानों पर पानी फेर दिया जाता हैं। संसद में हर दिन नई-नई योजनाएँ बनायी जाती हैं, जन कल्याण के लिए विचार किए जाते हैं। परंतु यह विचार या योजनाएँ मुख में या कागज पर ही रह जाती हैं, उसका इस्तेमाल कहीं भी नहीं किया जा सकता।

हमारी संसद समाज के दायित्व को भूल चुकी है। वह जनहित के लिए नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे की उदात्त भावनाओं का संदेश देती है। जिसका हमारे समाज से कोई संबंध नहीं है। ऐसी व्यवस्था ही कभी जाति, कभी धर्म के नाम पर लडती हैं।

"इस बात पर सहमत हैं कि इस देश में
असंख्य रोग है
और उनका एक मात्र इलाज
चुनाव है
लेकिन मुझे लगा कि, एक विशाल दलदल के किनारे
बडत वज अधमरा पशु पडा हुआ है
उसकी नाभि में एक सडा हुआ घाव है
जिससे लगातार-भयानक बदबूदार मवाद
बह रहा है

उसमें जाति और धर्म और संप्रदाय और
पेशा और पूँजी के असंख्य कीडे
किलबिला रहें है और अंधकार में
डूबी हुई पृथ्वी
पता नहीं किस अनहोनी की प्रतिक्षा में
इन भीषण सडॉव को चुपचाप रुह रही है। (33)

धूमिल की उपर्युक्त पंक्तियाँ भारतीय राजनीतिक संचालन सूत्र, सामाजिक असंगतियों, विकृतियों को अधमरे पशु के माध्यम से संपूर्ण राष्ट्रीय चरित्र की स्थिति को उद्घाटित किया है।

भारतीय जनता अशिक्षित धर्म भीरु है। धर्म, जाति, संप्रदाय, के नामपर अनेक संकटों का सामना करना पडा और इसीकारण मानवीय मूल्यों का विनाश हुआ।

धूमिल हमारे राष्ट्र की भोली जनता को अपनी कविताओंके माध्यम से जागृत करना चाहते हैं ताकि हमारा समाज वास्तविकता से परिचित होकर सही व्यक्तियों, राजीतिज्ञों, को संसद में ला सके। सही व्यक्तित्व ही जनता की समस्याओं को समझ कर हमारे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधकर गतिशिलता, प्रगति के नामपर दिशोन्मुख कर सकते हैं। व्यवस्था समाज प्रगति के नामपर दिशोन्मुख कर सकते हैं। व्यवस्था समाज को चमत्कारिक कारनामें, रहस्यमयी खेल दिखा रही हैं।

"दरअसल अपने यहाँ जनतंत्र
एक ऐसा तमाशा हे
जिसकी जान
मदारी की भाषा है।" (34)

धूमिल ने सचमुच व्यवस्था की दूषित, भ्रमित, दायित्वहीन, आश्वासनपरक, रहस्यात्मक, क्रियान्विति को मदारी के खेल से उद्घाटित किया है। राजनीतिज्ञ लोग भी चुनावों से पूर्व एवं निर्वाचित होने के उपरांत भाषणों में ऐसी कलात्मक जादूई मदारी भाषा का प्रयोग करते हैं तथा निरक्षर जनता व्दारा बहुमत प्राप्त कर पुनः अपनी कुर्सी पर असीन हो जाते हैं।

धूमिल ने सिर्फ निर्विवाद रुप में केवल व्यवस्था की आलोचना की है बल्कि व्यंग्य के माध्यम से जनता को सही मार्गपर लाने का सार्थक प्रयास संपन्न किया है। समाज को निरंतर आश्वासनों के आदर्शवादी रुप दिखाई दिये जाते हैं। जनता इस रहस्यमयता को (भ्रम और मदारी की भाषा) वास्तविक धरातलपर समझ नहीं पाती।

धूमिल की राजनीतिक समझ इस वास्तविक तथ्य से परिचित हैं कि, प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सामान्य जन-मानस के हितों का कोई भी सार्थक प्रयास नहीं हो पा रहा। समाज में हर जगह शोषक शोषित का संबंध विद्यमान रहता हैं।

"यह जनता
जनतंत्र में
उसकी श्रध्दा
अटूट हैं
उसको समझा दिया गया है कि यहां
ऐसा जनतंत्र है जिसमें
जिंदा रहने के लिए
घोडे और घास को
एक जैसी छूट है।" (35)

जनतांत्रिक देश में घोडा और घास (शोषक-शोषित) के संबंधों की भयावहता हैं। जिस राष्ट्र में सर्वत्र घोडे और घास शोषक-शोषित संबंधों का अधिक्य हो, तो वहाँ क्या सामान्य जन मानस के हित की कल्पना की जा सकती हैं।

धूमिल ने अपनी रचना के माध्यम से प्रजातंत्र, शासनतंत्र एवं समाज की बेरोजगारी की समस्या को उद्घाटित किया है। ऐसे शासन तंत्र में आम तिरस्कृत व्यक्ति के जीवन का कोई महत्व नहीं। अंधी लडकी की आँखों में सहवास का सुख तलाशना व्यवस्था की विकृत नीतियों पर गहरा व्यंग्य कसा है। ऐसी शासन तंत्र की प्रणाली को देखकर कवि का मोहभंग होना सहज स्वाभाविक है।

"आजादी इस दरिद्र परिवार की बीस साला 'बिटिया'
मासिक धर्म में डूबे हुए कँवारेपन की आग से
अंधे अतीत औरा लंगडे भविष्य की
चिलम भर रहीं है।" (36)

कवि ने आजादी को बीस वर्षीय बिटिया के क्वाँरेपन और मासिक धर्म में निरंतर तल्लीन भाव (कुर्सीवाद, वैयक्तिक सुख-सुविधाएँ, अनैतिकता) को रेखांकित किया है। लडकी के क्वाँरेपन को प्रतीकात्मक, व्यंग्यपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। शासन का यह अंधा अतीत और लंगडा भविष्य धूमिल को निरंतर कचोटता हैं।

जैसे अंधे के कंधे पर लंगडा व्यक्ति बैठकर उस चक्षु विहीन व्यक्ति को रास्ता देता हैं, ठीक यहीं स्थिति हमारे राष्ट्र में संचालन तंत्र की रहीं है। राजनीतिज्ञ अपनी कुर्सी प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयास करते रहते हैं। सडक से उन्हें कोई सरोकार नहीं होता। समाज में हर तरफ अंतर्विरोधी नीतियों का बाहुल्य है।

मैंने अहिंसा को
एक सत्तारुढ शब्द का गला काटते हुए देखा
मैंने ईमानदारी को अपनी चोर जेबें
भरते हुए देखा
मैंने विवेक को
चापलूसों के तलवे चाटते देखा।" (37)

धूमिल कहते हैंकि, मैंने समाज में सर्वत्र अहिंसा, ईमानदारी, विवेकशील, मानव वृत्तियों आदि का विघटन होते हुए देखा है। प्रत्येक स्थितियों में अंतर्विरोध पैदा होते देखा है। जब तक व्यवस्था प्रणाली में सही व्यक्तित्ववाले लोग प्रवेश नहीं करते तब तक सडक समस्याओं का सार्थक समाधान होना संभव नहीं। ऐसा तभी संभव है जब हमारी संसद में विवेकशील लोग पहुँचे ताकि सडक और संसद का सेतु निरंतर जुडा रहें।

वास्तवितकता यह हैं कि, सामाजिक चेतना से युक्त प्रत्येक कविता में भी राजनीतिक आलोचना स्वाभाविक रुप से आती हैं। हमारे समाज के संचालन सूत्र, संघटित, विघटित स्थितियों को उद्घाटित करते-करते राजनीतिक अंतर्विरोधी मुद्दों, उत्तरदाची तत्वों को रेखांकित करना भी सर्वथा प्रासंगिक हैं।

जहाँ तक "व्यवस्था की आलोचना" का प्रश्न हैं - यह स्वाभाविक है, क्योंकि आलोचनात्मक दृष्टिकोन अनुचित अप्रासंगिक नहीं अपितु युग मांग अनुकुल है। वह सामाजिक विसंगतियों ही उद्घाटित नहीं करता तो उनके उत्तरदायित्व तत्वों को भी उद्घाटित करता हैं।

डॉ. विद्यानिवास मिश्र का अभिमत है -

"धूमिल की कविता बुनियादी तौरपर केवल व्यवस्था से नहीं जूझती तो व्यवस्था की अमानवीय परिस्थितियों से जूझती हैं। जब कोई रचनाकार साहित्य जगत् में कोई नवीन सृजनात्मक स्थापनाएँ स्थापित करता हैं तो कुछेक अंतर्विरोध कमियाँ अवश्य रह जाती हैं, जो स्वाभाविक होती हैं।

धूमिल को भी इस दृष्टि से नवीन सृजनात्मक आयामों की स्थापनाओं का शिकार होना पडा। धूमिल की राजनीतिक चेतना अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों तक प्रसारित हैं। वह विध्वंसात्मक नीतियों के प्रति सचेत हैं।

"मैं देख रहा हूँ एशिया में दायें हाथों की मक्कारी ने
विस्फोटक सुरंगे बिछा दी है
उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम कोरयिा-वियतनाम
पाकिस्तान इसराइल और कई नाम
उसके चारों कोनोंपर खूनी धब्बे चमक रहें है।" (38)

ऐसी विध्वंसात्मक नीतियों को देखकर कवि मन अत्यंत सचेत हो उठता हैं। धूमिल एक सही राजनीतिक चेतना का कवि होने के कारण उन्होंने समाज के टूटते सेतु को सार्थकता से जोडना चाहा। धूमिल जीवन अनुभवों की प्रामाणिक अनुभूतियां सामाजिक गतिविधीयों से टकरा कर वास्तविकता के धरातल पर उतर आये है। इस कवि की कविताओं का प्रत्येक शब्द, वाक्य विन्यास जीवन अनुभवों की प्रामाणित देन है।

कवि निजी जिंदगी में निरंतर यातनाएं झेलता रहा और वहीं यातनाएं उसने समाज में निम्न वर्ग एवं मध्य वर्ग के लोगों में देखी और उसका मन बेचैन हो उठा। इसलिए उन्होंने समाज को सचेत जागृत रहने को कहा है।

आज समाज में जो अन्याय है, जो अंधकार है उसका हमें डटकर विरोध करना चाहिए। उच्च वर्ग और निम्न वर्ग में जो दूरी है इस दूरी को कमी करने की कोशिश हमें करनी है। अमीरी-गरीबी, उच्च-नीच ऐसा भेदभाव नहीं करना चाहिए। जिस्का जो हक है उसे वह मिलना ही चाहिए चाहे अमीर हो या गरीब, उच्च हो या नीच, जाति का हो या और कोई हो। हमें स्वाभिमानी रहना चाहिए।

इसप्रकार धूमिल ने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचार समाज या जनता के सामने रखने का प्रयत्न किया है। उनका कहना हैं कि, मानव-मानव में प्यार की भावना उत्पन्न होनी चाहिए। एक दूसरे के प्रति जो घृणा उत्पन्न हुई है उसे हमें अपने दिल से निकालनी चाहिए। इसप्रकार की भावना मन में लेकर हमारे देश की जनता अपना काम करेगी तो कोई भी राजनीतिज्ञ हमें जुदा नहीं कर सकता। अगर हम एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहेंगे तो देश कहाँ से कहाँ तक पहुँच जायेगा और देश भी उन्नती के पथ पर सबसे आगे बढ़ जायेगा।

******* 0 *******

xxx अध्याय नं.3 xxx

1. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम — पृष्ठ 41, 42
2. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम — पृष्ठ 41
3. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ 104
4. कल सुनना मुझे – धूमिल – किस्सा जनतंत्र — पृष्ठ 17
5. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – धूमिल – शिविर नम्बर तीन — [illegible]
6. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ 105
7. संसद से सडक तक – धूमिल – हत्यारी सम्भावनाओं के नीचे — पृष्ठ 78
8. संसद से सडक तक – धूमिल – जनतंत्र के सूर्योदय में — पृष्ठ 11
9. संसद से सडक तक – धूमिल – कविता — पृष्ठ 8
10. कल सुनना मुझे – धूमिल – दस्तक — पृष्ठ11
11. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ 113
12. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम — पृष्ठ 38
13. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम — पृष्ठ 41, 42
14. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ 115
15. संसद से सडक तक – धूमिल – कुत्ता — पृष्ठ 70
16. संसद से सडक तक – धूमिल – हत्यारी सम्भावनाओं के नाचे — पृष्ठ 78
17. कल सुनना मुझे – धूमिल – एक कविताः कुछ सूचनाएँ — पृष्ठ 27
18. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम — पृष्ठ 39
19. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम — पृष्ठ39, 40
20. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम — पृष्ठ 41
21. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ 108
22. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ 114
23. संसद से सडक तक – धूमिल – मुनासिब कार्रवाई — पृष्ठ 86
24. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ 112
25. कल सुनना मुझे – धूमिल – जवाहरलाल नेहरु की मृत्युपर — पृष्ठ 9
26. संसद से सडक तक – धूमिल – शान्तिपाठ — पृष्ठ 24
27. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा — पृष्ठ102

28. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 107

29. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 125,126

30. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 125

31. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – धूमिल – सुदामा पांडे का प्रजातंत्र (एक) पृष्ठ 17

32. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 127

33. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 118,119

34. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 105

35. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 105

36. संसद से सडक तक – धूमिल – राजकमल चौधरी के लिए पृष्ठ 31

37. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 120

38. संसद से सडक तक – धूमिल – शान्तिपाठ पृष्ठ 25